मेरा भी एक सपना था...

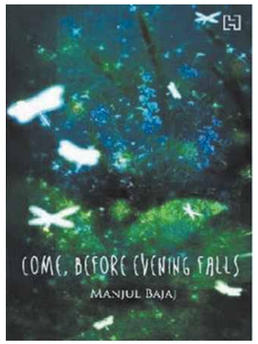

जूलिया अनीमा दत्ता

मैं एक शहर में रहती हूँ। मुझे यहाँ अपने कस्बे की बहुत याद आती है। एक छोटे-से कस्बे की खुशियों की याद। वहाँ की याद, जहाँ मेरा बचपन बीता। वहाँ के हरे चरागाहों की याद। ऊँचे-लम्बे पेड़ों, छोटी नदियों और किलकते झरनों की याद! कस्बे के छोटे रास्ते! पड़ोस। पड़ोस भी ऐसा कि लगता जैसे हमारे परिवार का ही एक हिस्सा है।

शिलाँग जहाँ मेरा बचपन बीता वह मेरे दिल के बहुत करीब था। बड़ी हुई तो एक बड़े झिलमिलाते शहर में चली आई। एक शहर जहाँ लोग अपने सपने पूरे करने आते हैं – मुम्बई। मुम्बई कई मायनों में शिलाँग से बहुत अलग था। छोटे शहरों का अपना आकर्षण होता है। बड़े शहरों में हम जिन रिवाज़ों, व्यवहारों को बड़ी कोशिशों से बनाए रखते हैं, कस्बों, गाँवों में कितने स्वाभाविक रूप से उन्हें निभाया जाता है।

अपनी दोस्त मंजुल बजाज की किताब *कम बिफोर इवनिंग फॉल्स* (शाम से पहले आ जाना) पढ़ते हुए एक बार फिर मैं उन्हीं यादों में खो गई। मुझे भूली चीज़ें याद आने लगीं।

इस किताब की नायिका जुगनी है। जुगनी अपने दादा-दादी के साथ कला सांद नाम के एक गाँव में रहती है। माँ-बाप की मौत के बाद उसके दादा-दादी ने ही उसे पाला-पोसा है। जुगनी कभी स्कूल नहीं गई। घर पर ही कितने काम हैं उसे! अपने भाइयों की ज़रूरतों का ख्याल रखना। घर के कामकाज में दादी का हाथ बँटाना। अपने भाइयों की तरह जुगनी को कभी स्कूल जाने का मौका नहीं मिला। वह घर के सारे काम बिना मन मसोसे करती है।

पर, जब से गाँव के स्कूल में नए मास्टरजी आए हैं और सभी उनके बारे में अच्छी-अच्छी बातें करने लगे हैं तब से हालात बदलने लगे हैं। जुगनी को लगने लगा है कि उसे तो वह मज़ा कभी मिला ही नहीं जो उसके भाइयों को मिल रहा है। एक दिन वह कुएँ से पानी भर रही थी। अचानक उसने पानी में अपनी परछाईं देखी। उसे लगा जैसे पानी में दिख रही जुगनी उससे कह रही है, "तुम जलती हो?"

जुगनी इसे नकारते हुए कहती है, "मैं क्यों जलूँगी भला?"

धीरे-धीरे साफ नज़र आने लगा कि भले ही जुगनी इस बात को अपने मुँह से न कहे कि उसे आज़ादी चाहिए पर असल में जुगनी को भी आज़ादी चाहिए। वहाँ जाने की जहाँ उसके भाई हैं – यानी नए मास्टरजी के पास। उसे भी वह सब मौज-मस्ती चाहिए जो उसके भाइयों को मिली है। उसके दादा के सुरक्षा-घेरे के बाहर का जीवन कैसा है वह देखना चाहती है। उसने जाना कि सिर की चुन्नी भी पाँव की बेड़ियाँ बन सकती हैं।

जुगनी के परिवार में औरतों, लड़कियों को बाहरी दुनिया से बचाकर रखा जाता है। यह कोई अनोखी बात नहीं है। हमारे देश में कई जगहों पर ऐसा किया जाता है। जब मैं बड़ी हो रही थी तो बड़ा मन करता था अकेले बाहर जाने का। पर, माँ और परिवार वाले हमेशा किसी न किसी को मेरे साथ कर देते थे। उन्हें मेरी चिन्ता रहती थी कि कहीं मेरा बुरा न हो जाए। मैं मन मसोस कर रह जाती।

शायद इसीलिए जुगनी की कहानी पढ़ते हुए मुझे कुछ भी अजीब न लगा। मैं बार-बार अपने पास लौटती रही – अगर मैं उस छोटे-से कस्बे में बनी रहती तो क्या कभी वहाँ के समाज पर सवाल उठा पाती? क्या मैं ज़िन्दगी भर उसका एक हिस्सा बनी रहती? और अगर मैं शिलाँग के उस छोटे-से कस्बे में रह रहे लोगों के बीच उन्हीं जैसे होकर रहती तो क्या खुश नहीं रहती? मुझे पक्का पता है कि मैंने उस ज़िन्दगी को वैसे का वैसा स्वीकार कर लिया होता। शायद बिना किसी शिकायत के। लेकिन मेरी इच्छा थी कुछ ज़ोरदार करने की, आज़ादी पाने की। मेरा मन वो सब गलतियाँ करना चाहता था जिन्हें करने के बाद ही हम जीवन में कुछ सीखते हैं। परिवार के बड़े-बूढ़ों के सुरक्षा-घेरे अब मेरा दम घोंट रहे थे। तो मैंने एक लड़ाई लड़ी। अपने मन के हिसाब से जीने की लड़ाई। मैंने वो कस्बा छोड़ दिया। और एक बड़े चमचमाते शहर में आ गई। यहाँ मुझे वो आज़ादी मिली जिसकी मुझे चाह थी।

आज़ादी से बड़ी हिम्मत मिलती है। हम जो भी निर्णय लेते हैं उससे हमें ताकत मिलती है। हम लोगों को बताते हैं कि हम क्या हैं। हम अपने रास्ते खुद बनाते हैं। फिर भी, कभी-कभी मुझे वो गुज़रे साल याद आ जाते हैं। दिल भारी हो जाता है। याद आती है वो सुरक्षा जिसे मैं कब का पीछे छोड़ आई हूँ, वो मुझसे की गई अपेक्षा जिसे मैंने कभी पूरा नहीं किया। वो आज़ादी जो मैंने कितनी जगहों से छीनकर पाई है। वो बड़े-बूढ़ों की नेक सलाह जिसे मैंने कभी सुनने लायक नहीं समझा। एक रास्ता जिस पर मैं चलती चली गई – अकेले और बिना डरे। पर, इस सब की भी एक कीमत चुकाई है मैंने – कस्बे की उस छोटी-सी लड़की जितनी अब मैं मासूम कहाँ रही।

मैं जुगनी हूँ पर केवल सपनों में ही।

माथापच्ची के हल

- कुल 22 बच्चे।
- 15 रुपए में 15 टॉफी आएँगी। चूँकि 3 रैपर लौटाने पर 1 टॉफी मुफ्त है इसलिए 15 रैपर लौटाने पर पॉच टॉफियॉ और आ जाऍगी। फिर तीन रैपर देने पर एक नई टॉफी आ जाएगी। अब पहले के बचे हुए दो रैपर और इस नई टॉफी के रैपर को देने पर एक और टॉफी आ जाएगी। यानी कि कुल 22 टॉफियाँ।
- दायाँ हाथ
- अण्डा (नारियल?)
- 2307

चित्र : दिलीप चिंचालकर